

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

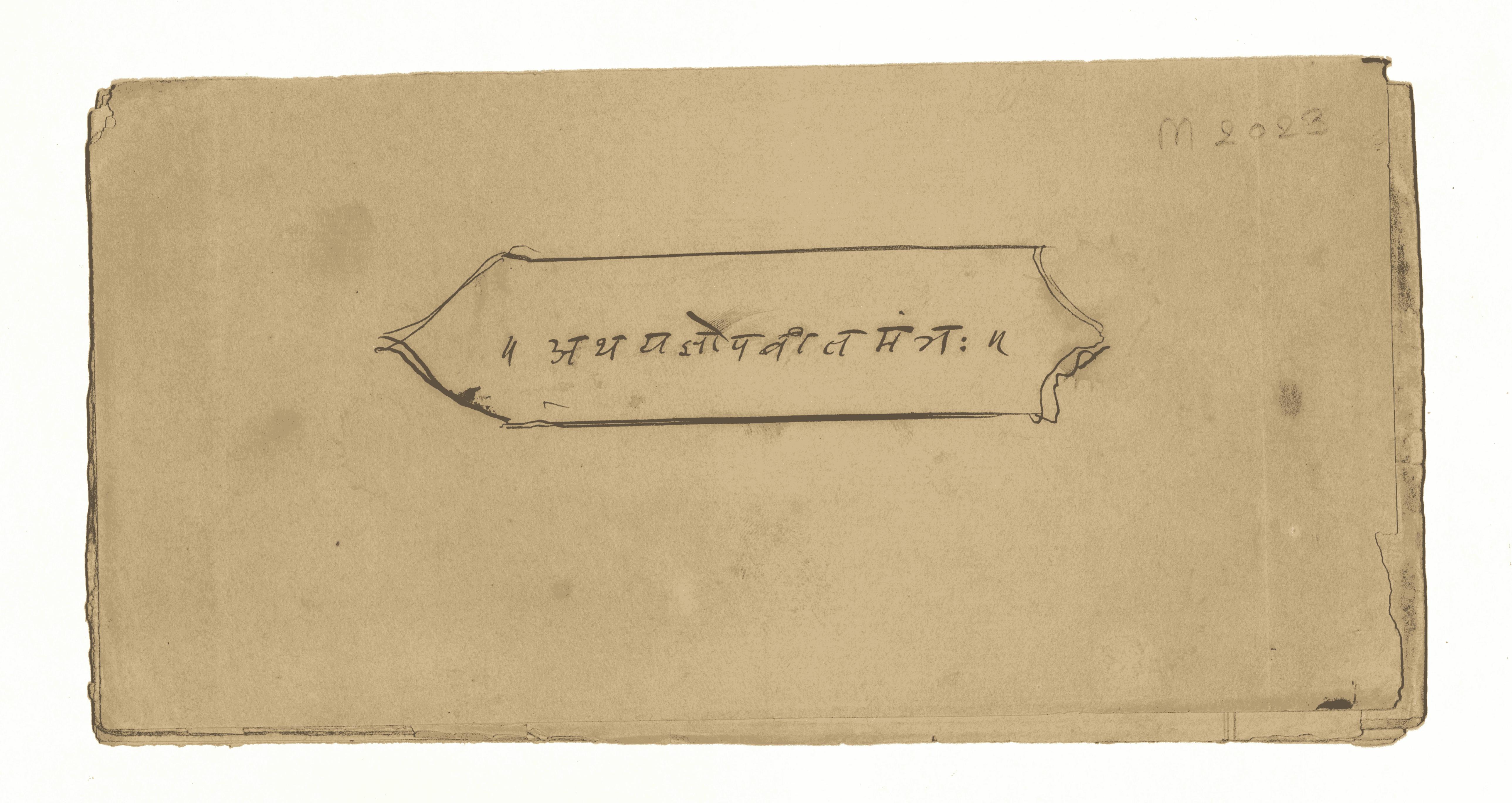
https://www.namami.gov.in/

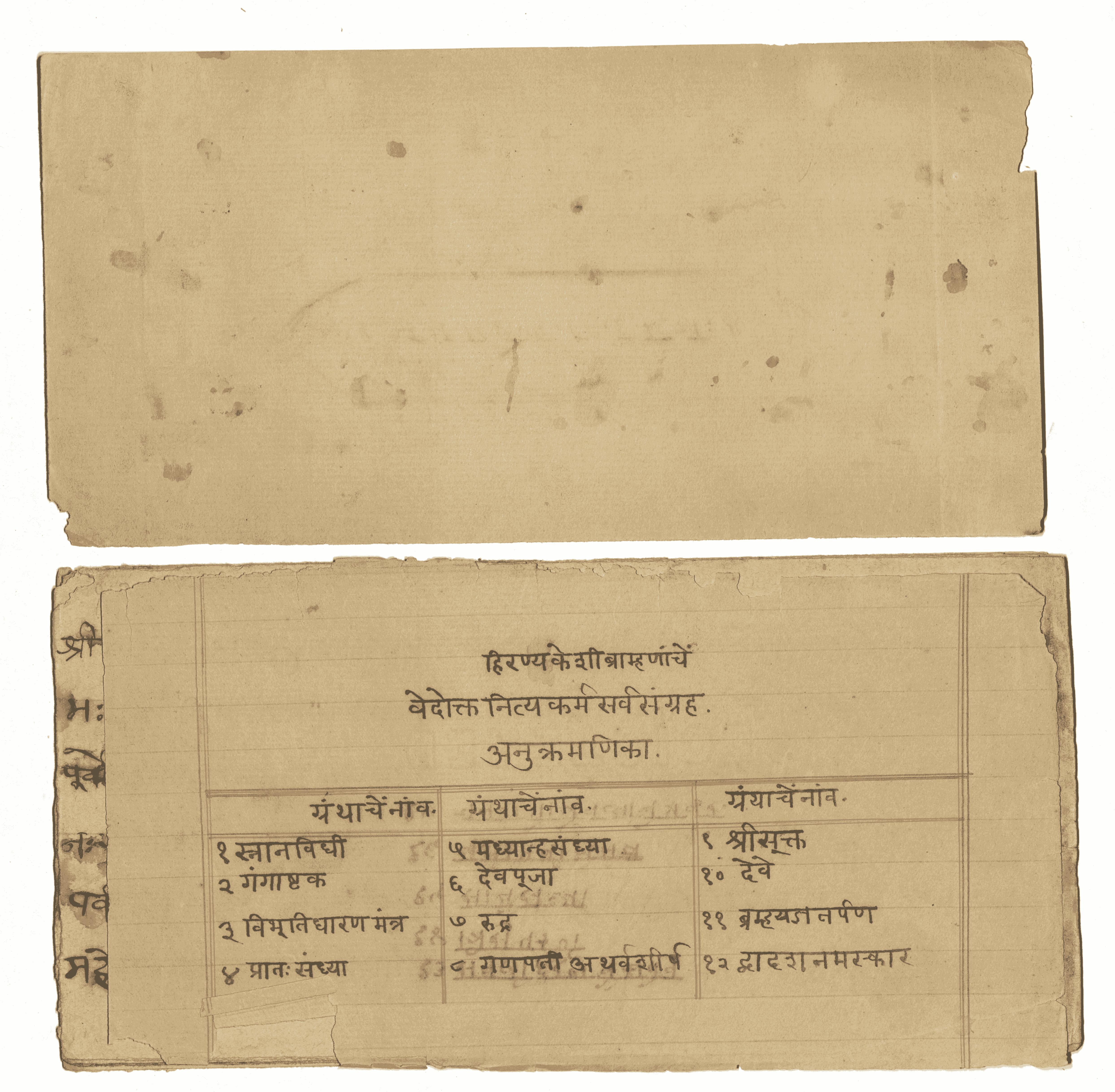
Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/





CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

तरः ,तस्मा ५ अतंग्र माभवा यस्य क्षया यजिन्वथा ॥ आ पोजनयथा आ पाजन हरण्यवणीः यु चयः पाववा यासजातः व्यस्थपोयास्विद्रः॥अविव अर्भ हथीरे विस्पाः स्तानमापः याः स्टोना अर्वतु। यानाः याना णो याती महिय सत्था मृते ता अपपर्यं नना ना । मधुन्यतः शुन्य योगाः पानका स्तान आपः शर्भोनाभवंगु ॥ याभा देवा दिवी क्रणवंतिभ श्री या अंत विसे बहुधा अवंति। याः विभिनीं पय भों हे वि गुड़काः स्तान अनापः

का स्थाना भनता ॥ शिवन भा पश्चाप पश्य ता पः शिवयात नुकी प्रभुश तत्प यंभे ॥ सर्वा ए असी ए र एतु सम्बद्धा हर्वनी मारि निर्मी नाम मोजा निधत्ता ॥ पवमानः भुवजनः ॥ पवित्रण विच भी जिल्लाम् भोता सपुना नुभा। पुनेतु भा देवजनाः ॥ पुनेतु भनवा विथा॥ पु वंद्रविश आयवः॥ जात वेदः पार्वम वत्॥ पार्वमेण पुना हिमा शुक्रण देव दीयत्।। अशे कला कर्ए रज् ॥ यत्त पार्वक्र मार्थिता

अग्राचितत्तं भंतरा॥ ब्रष्ट्तन् पुनीमहै॥ उभाभ्यां देव मावेतः॥ पर्व निगरियमचा । इरे ब्रेम्ट प्रानिमरेगा वेख दे वि प्रनती देव्या जाता पर्क थस्येववीः स्तन्वो वित प्रवाः॥ तथा भदतः सध्याद्वाप्॥ वथा स्था मपत्थार थीणां। विश्वानरो रिष्मि भी पुनातु ॥ वातः प्राणेन विरो मथाश्रुः ॥ ह्यावा धार्वितां प्रथरना प्यो भिः॥ ऋतावरी थाई बेमा प्रानिता ॥ श्रुटार्दः समितः स्ताभैः ॥ विषिधिदिव भन्माभैः ॥ अन्व दक्षः पुना

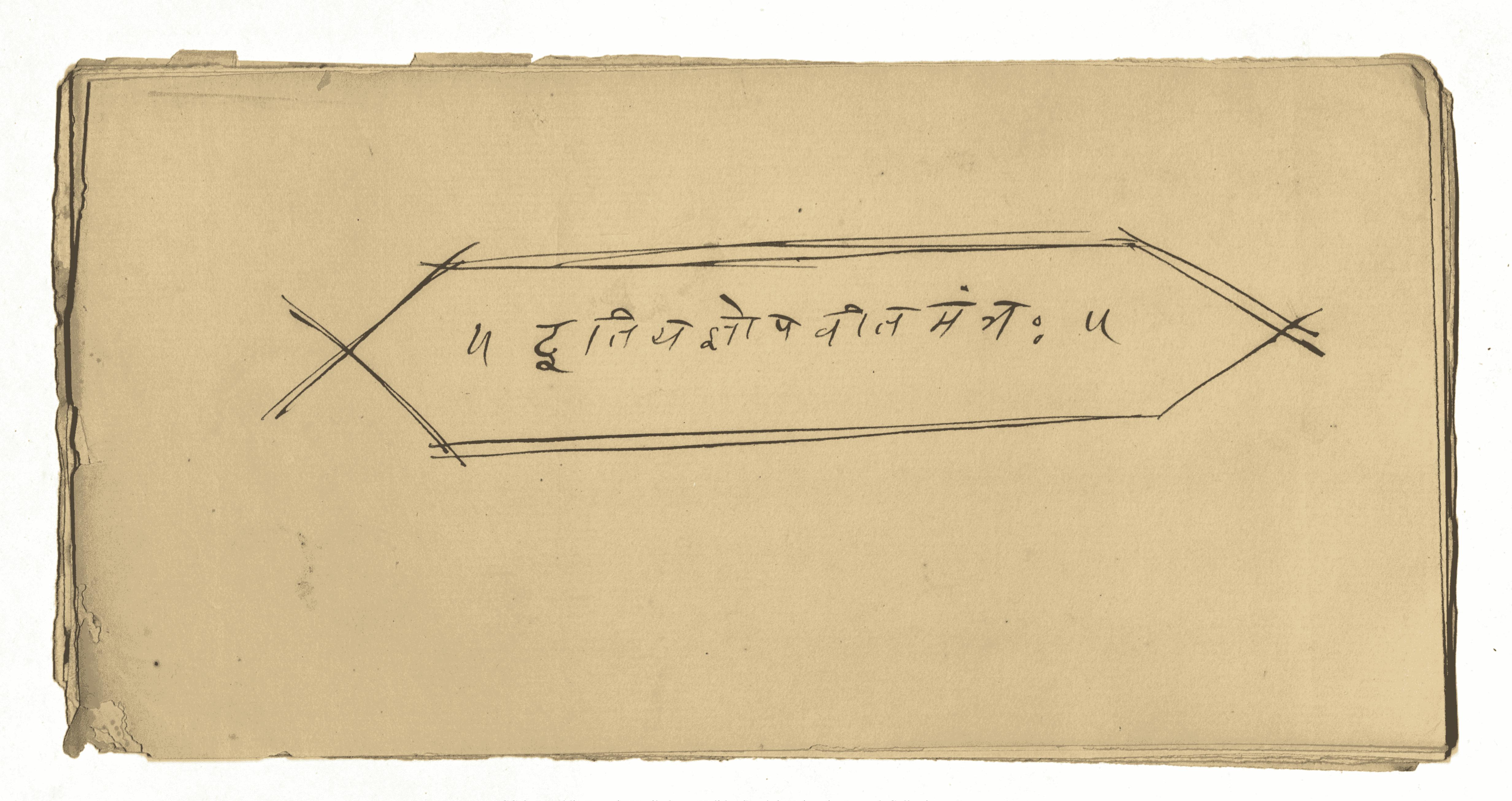
हिमा। वेन देनाउन पुनता। योगापितिव्यंक शः।। तेन दिव्यन प्रमुखान्। दु दंत्रसप्तीमहै।यः पानभानी रहीती।।ऋषित्रः संभा सर्वश्मप्तानात्रमाता ।१३वना।। पानभाभी विभिन्न ति ॥ उत्वित्रः सं भूतः २२ गंति । रमेन २२ वर्तादु हे, श्री र ूमि विभिध् द्या, पाच भाभी: र-जस्य यन्ती: । सुद्धाहि पय र-जती: ॥ किविभिः में श्री रसा।।श्रामहणे ज्वमता इहिता। पाचमा मीर्हि हात माड्या व

मधा अम् मान्समान्समा हो यं तुनः ॥द वहिनेः समाञ्च ताः॥ पावमानीः स्वस्य यनीः॥ स्तर्धाहिधतञ्जतः॥ अटिषि भिः संशिता रसः ब्राम्हणे व्यास्ता एहितं। ये ने देवाः पवित्रणा आत्मानं पुनर्ते भारति तन सहस्रधारे णापा व मान्यः पुनेतु मात्र प्राचित्रं। शानापत्ये प्रावेकां। शते धामस्थिरं जमयं। तन श्रम् विरोवयां। प्रतंत्रमः

पुनीमरे॥ देवः सुनिती सहमा पुनातु॥ स्वीमः स्वस्था वरित्णः समीचा॥ यमोराम्स प्रशानिः पुनातुमा। जान वदा मा र्ज यंत्या पुनानु ॥ भराज्ञींच प्राधिनीं चर्मांचा। भी पृथा हो मान्यंवतारं म् ॥ भूजा पातिस्वासाद यागा नयादेव तथा विरास्य मध्यासीद ॥ भूबो वा युंचांत रिक्षं य भांच ॥ भी ए श्रां नियासद्य ॥ प्रजायातीस्वासत्ययुगा नथादेव प्तया गरः स्वाध्वासाध्या स्वरा दिवंच पिच प भी देश में अवस्थ स्परंगा प्र जांप तिस्वासाइय है। तथादेव सदां जिस्स्वाध्वसीद् ॥ श्रुवः स्वः श्रंदेभरांचार शकामाधा। भीण्या लोश न्सवासंस्य ॥ भजर पातिस्वा सादयानु ॥ तया देवता यो । जी रास्वाध्य वर्गीद्॥ उ७ वरारे भ्रथम नंतरियसाधि॥ वि आक्षेत्रितिय नंतरिय सामिष मागान् नीतीय तंती न्य सताती। मोगंचारु धं तंतीन्य आकि।

वा युं स प्रमतंती न्यं सामी, सूर्ये अष्मतंतीन्यसाभी। विश्वादेवाजवमतंतीन्य सामी उद्दर्शामसारपरिपर्स तो ज्यो ती के सरा हें विवास य मगन्म ज्यो ति क्समें॥ उद्भाराविद्भादिवदात्रिते कतवः द्याविशायस् यी। चिने दे पाता भु र गा र ती कुं पर्या मिन्र स्वास्प स्या भी: ॥ अत्राप्ता चावा प्रची पी अंता वि द्वा दे से से अति भी जमातः स्तर्थुपन्धा। निया उथेता उथेता अधि धर्मी परीता

वर्तभाव ॥ वं या । विशेषणी वी भेषा यां शुभ पुण्य तिभीमम अना लानाः श्राति समुती पुराणी न्छ प्रत्रा धार्या, औत्। स्मातं क्रमिनु व्हानासि द्ध्ययं यत्ता पवी ता धारण महं क्रिनि च्या, यहाी पवीतं परमं पविनं प्रजापते र्यत्सर्डां प्रयस्ताताताता युव्य मग्यं प्रति मुंच शुभ्यशी प प्वीतं विस्मिन्यते जा स्वामिनीः जिला। मध्यस्य ग्रेष्



CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=24.07.19 17:08
,TRANSFERRED=2019/07/24 at 17:15:50
,PAGES=12
,TYPE=STD
,NAME=S0001121
,Book Name=M-2023-YAGOPVITMANTRAM
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE5=00000005.TIF

,FILE7=0000007.TIF

FILE8=00000008.TIF ,FILE9=00000009.TIF ,FILE10=00000010.TIF ,FILE11=00000011.TIF ,FILE12=00000012.TIF